# विदेश को स्वदेश बना लेने की कला

**डॉ. एम. डी. थॉमस**

---

डॉ. फादर कामिल बुल्के की जन्म शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। डॉ. कामिल बुल्के का व्यक्तित्व और योगदान बेहद सराहनीय रहा। इसके अनेक आयाम हैं। पहली बात है कि बेल्जियम मे पैदा होकर भी वे भारत के समाज के एव सदस्य बने, भारत के नागरिक बनकर जिये, जन्म भूमि से आगे बढ़कर उन्होंने भारत को अपनी जीवन भूमि और कर्म भूमि बनाया। और यहीं की मिट्टी में वह हमारे साथ मौजूद हैं, प्रेरणा देते हैं। स्वदेश से विदेश जाकर विदेश को स्वदेश समझना एक कला है। यही जीने की कला है। अपने पराये के बीच में जो फासला है, इस फासले को मिटाते हुए पराये को अपना समझने का एक तरीका है। यहीं आए और भारत की भूमि को अपनी समझ कर, भारत के हर नागरिक को अपना समझ कर वह भारत के नागरिक के रूप में जिये। यह वास्तव में प्रेरणादायक बात है।

दूसरी बात यह कि आप हिंदी भाषा का अध्यन करते हुए हिंदी भाषा के विद्वान बने और उस भाषा को समृद्ध करते हुए आपने आपने ऐसा योगदान दिया है जो हमेशा के लिए स्मरणीय है। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है। भारत की पहचान है हिंदी। हिंदी एक दूसरे से जोड़ने की एक भाषा है। भारत की अखण्डता और समरसता हिंदी भाषा के द्वारा फलीभूत होती है। अपनी मातृभाषा को एक तरफ करते हुए दूसरे देश की भाषा को अपनी भाषा बनाकर उस भाषा में विद्वान होकर योगदान देना बड़ी प्रशंसनीय बात है। यही काम, फादर बुल्के ने किया। उस भाषा के माध्यम से उन्होंने इतने लोगों तक पहुँचने का द्वार खोला और भारतीय जनता से अभिन्न संबंध कायम किया।

तीसरी बात यह कि वे हिंदी साहित्य के विद्यार्थी रहे और हिंदी में महाकवि तुलसीदास की 'विनय पत्रिका' पर काम करते हुए, राम कथा को गहराई से समझते हुए, उसके मर्म को उकेरते हुए और उसमें जो खूबसूरत मूल्य हैं, उनको अपनाते हुए उनको बुलंद करना एक बहुत बड़ी खूबी है। 'साहित्य' शब्द के दो पहलू है। साहित्य सा+हित का भाव है। यानि समाज की भलाई का भाव। साहित्य के दूसरे पहलू भी हैं। सा-हित होने का भाव, साथ होने का भाव। समाज की, भारतीय समाज की भलाई के प्रति वह समर्पित हैं।

चौथी बात है कि भारतीय जनता के साथ, भारत के हर नागरिक के साथ, भारत की राष्ट्रभाषा के और राष्ट्रीय साहित्य के साथ वह सहित के भाव और हित के भाव के साथ चले।उसमें 'विनय पत्रिका' और 'नये विधान' (न्यू टेस्टामेंट) के साथ तालमेल बैठाते हुए आपने हिंदी साहित्य को ही समृद्ध नहीं किया बल्कि उसे विश्व स्तर पर लोकप्रिय किया। यह छोटी बात नहीं है। संस्कृतियों की खूबसूरती अपनाते हुए उनको भारतीय संदर्भ में, भारतीय संस्कृति के बीच आदान-प्रदान स्थापित करते हुए उन्होंने संस्कृतियों का सम्मेलन (संगम) कर दिया है, समन्वय कर दिया है।

पाँचवीं बात, ईसाई परंपरा में दीक्षित होकर, इसाई मूल्यों को हृदयंगम करते हुए भी इन सभी धर्म-धर्म की दीवारों को लाँघ कर भारतीय संदर्भ में हिंदू परंपरा में जो सार्वभौम मूल्य हैं, उन्हे अपनाकर धार्मिक समन्वय और सर्व-धर्म समन्वय की वृहद् पहल करके उन्होंने दिखाया। भारत की एकता, विविधता या वसुधैव कुटुंबकम की बात इसमें निहित है। इस प्रकार, इन्होने साबित कर दिखलाया कि एक दूसरे के विश्वास और परंपराओं में आपसी तालमेल और आदान प्रदान के माध्यम से ही हम धार्मिव समन्वय और सर्व-धर्म समन्वय करते हैं। अंत में महात्मा कबीर की

दो पंक्तियाँ पेश करके मैं डॉ. कामिल बुल्के, पद्म भूषण, को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहुँगा, जिनका विद्यार्थी होने का सौभाग्य मुझ मिला था-

'बहता पानी नर्मला, बंधा गंदा होय।
साधु जन रमता भला, दाग न लागे कोय।'

डॉ. कामिल बुल्के बहते पानी के समान चलते रहे। देश, भाषा, साहित्य, संस्कृति और धर्म की सीमाओं को लाँघ कर दूसरे की भाषा देश, साहित्य, संस्कृति और धर्म में जो खूबसूरत बात निहित है, जो मूल्य निहित हैं,उसमें जो बातें हैं उनको हृदयंगम करते हुए, आपसी तालमेल और समन्वय बैठाने की ऐसी पहल आपने की इसीलिए आज हम आपको याद कर रहे हैं।

---

**डॉ. एम. डी. थॉमस**
**संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली**
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS